हिन्दी कहानी

हिन्दी प्रतिष्ठा
(खण्ड II)

Prof - Roushan Kumar
Hindi (D)
J.K.C Birauli SBG

⇒ हिन्दी गद्य विधाओं में 'कहानी' सबसे सशक्त विधा बनकर विकसित हुई है। आज कहानी के पाठक अन्य सभी विधाओं की तुलना में सर्वाधिक हैं, यही कारण है कि पत्र पत्रिकाओं में कहानियों की मांग सर्वाधिक है। यही नहीं अपितु कई पत्रिकाएं तो केवल कहानी पत्रिकाएं ही हैं, जो समकालीन कथाकारों की स्तरीय कहानियों के साथ-साथ उभरते हुए कहानीकारों की कहानीयां भी छपती हैं। विगत 90 वर्षों में हिन्दी कहानी ने जो आशातीत प्रगति की है, वह उत्साहवर्द्धक है।
अन्य सभी गद्य विधाओं की अपेक्षा आज की हिन्दी कहानी में युगबोध की क्षमता सबसे अधिक दिखाई पड़ती है।

⇒ उपन्यास और कहानी दोनों में ही 'कथा' तत्व विद्यमान होता है, अतः प्रारम्भ में लोगों की यह धारणा थी कि उपन्यास और कहानी में केवल आकार का ही भेद है, किन्तु अब यह धारणा निर्मूल हो चुकी है। ज्यों-ज्यों कहानी की शिल्पविधि का विकास होता गया, उपन्यास से उसका पार्थक्य भी अलग झलकने लगा। वास्तव में कहानी में जीवन के किसी एक अंग या संवेदना की अभिव्यक्ति होती है जबकि उपन्यास में जीवन की ~~समग्रता~~ समग्रता का अंकन किया जाता है।
स्पष्ट है कि कहानी की मूल आत्मा 'एक संवेदना या एक प्रभाव' है। कहानी का प्रमुख उद्देश्य भी कम से कम शब्दों में उस प्रभाव को अभिव्यक्त करना मात्र है।

Scanned with CamScanner

क्लेटन हेमिल्टन ने कहानी की परिभाषा देते हुए लिखा है – "The aim of a shoart story is to Produce a single effect with the great-st economy of words."

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि एवं कथाकार एवं सूक्ष्मदर्शी यन्त्र है जिसके निचे मानवीय भाविनल के हृदय खुलते हैं।"

⟹ हिन्दी कहानी की विकास यात्रा का प्रारम्भ 1900ई. के आस-पास ही मानना समीचीन है, क्योंकि इससे पूर्व हिन्दी में 'कहानी' जैसी किसी विधा का सूत्रपात नहीं हुआ था। हिन्दी की प्रथम कहानी कौन सी है यह एक विवादास्पद प्रश्न है। इस सम्बन्ध में जिन कहानियों का नाम लिया जाता है, वे हैं :

(1.) रानी केतकी की कहानी : मुंशी इंशा अल्ला खां
(2.) राजा भोज का सपना : शिवप्रसाद सितारे हिन्द
(3.) इन्दुमती : किशोरी लाल गोस्वामी
(4.) दुलाईवाली : बंग महिला
(5.) एक टोकरी भर मिट्टी : माधव राव सप्रे
(6.) ग्यारह वर्ष का समय : आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

⟹ इनमें से दो में कहानी कला के तत्व विद्यमान नहीं हैं अतः उन्हें हिन्दी कहानी की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'इन्दुमती' को ही हिन्दी की प्रथम मौलिक कहानी माना है जिसका प्रकाशन सन् 1900 ई. में 'सरस्वती' पत्रिका में हुआ था, किन्तु शिवदान सिंह चौहान के अनुसार यह कहानी शेक्सपियर के 'टेम्पेस्ट' का अनुवाद है। अतः मौलिक रचना नहीं कही जा सकती। सरस्वती पत्रिका में ही सन् 1903 में रामचन्द्र शुक्ल की कहानी 'ग्यारह वर्ष का समय प्रकाशित हुई तथा सन् 1907 में बंग महिला की 'दुलाई वाली कहानी छपी। इधर नवीन अनुसंधानों के आधार पर यह सिद्ध हुआ है कि

Scanned with CamScanner

सन् 1901 में एक टोकरी भर मिट्टी' कहानी का प्रकाशन 'छत्तीसगढ़ मित्र' नामक पत्रिका में हुआ था, जिसके लेखक माधवराव सप्रे थे अतः यही हिन्दी की सर्वप्रथम मौलिक कहानी कही जा सकती है।

⇒ हिन्दी कहानी के विकास क्रम का अध्ययन करने के लिए हम कथा सम्राट प्रेमचन्द को यदि केन्द्र बिन्दु मान लें तो उसे चार भागों में विभक्त कर सकते हैं:

(1.) प्रेमचन्द हिन्दी कहानी
(2.) प्रेमचन्दयुगीन हिन्दी कहानी
(3.) प्रेमचन्दोत्तर हिन्दी कहानी
(4.) नई कहानी

Scanned with CamScanner